बुद्धवर्ष २५४५, आषाढ़ पूर्णिमा, ५ जुलाई, २००१ वर्ष ३१ अंक १

धम्मवाणी

बुद्धमप्पमेय्यं अनुस्सर पसन्नो, धम्ममप्पमेय्यं अनुस्सर पसन्नो।
सङ्घमप्पमेय्यं अनुस्सर पसन्नो, पीतिया फुटसरीरो होहिसि सततमुदग्गो॥

– थेरगाथा ३८२-३८४

असीम अप्रमेय बुद्ध, धर्म और संघ को याद करके प्रसन्न हो जाओ। शरीर को प्रीति-प्रमोद से भर लो और सदा उल्लास-उमंग के साथ रहो।

विपश्यना यात्रा २००१

(क्रमशः)...

दिनांक २१-०२-२००१. बुधवार

दूसरा पड़ावः बोध-गया

विपश्यना-यान दूसरे दिन २१-२-२००१ को प्रातः काल गया जंक्शन पर रुका। ध्यान संबंधी कार्य-क्रम अपने नियमानुसार। नित्य-कर्म। नाश्ता आदि गाड़ी पर ही हुआ। बस द्वारा हम लोग **धम्म-बोधि** विपश्याना केंद्र पर दिन में ११-३० बजे के बाद ही पहुँचे। १६ बसों का काफिला कोई आगे कोई पीछे। मानो सैनिकों के स्कंधावार में प्रवेश कर रहे थे। यहाँ तम्बू में निवास जो करना था। सभी तापस तपने चले थे। यहाँ समता की परीक्षा थी। सामान्य कठिनाईयों के बावजूद धर्म-धैर्य बना रहा।

धम्मबोधि विपश्यना केंद्र १८ एकड़ भू-खण्ड में विस्तृत है। यह मगध विश्व विद्यालय के दक्षिण में गया-डोभी रोड पर स्थित है। यहाँ से बोधि-मंदिर दिखता है। ६८ साधकों के रहने एवं ध्यान करने की व्यवस्था है यहाँ। धम्म-हॉल, पाकशाला, भोजनालय, आचार्य निवास है। नियमित शिविर लगते हैं। विकास होना शेष है।

पूज्य गुरुदेव एवं माता जी हमारे साथ हैं। उनके कष्ट की कल्पना कर मन करुणा से भर जाता है। लेकिन उनकी हालत यह कि वे साधक-साधिकाओं के कष्ट को देख कर द्रवित हो उठते थे। एक दिन गाड़ी की हर बोगी में चलते-चलते पूज्य गुरुजी एवं माताजी ने सब को प्रचुर मंगल मैत्री दी। सभी साधक मौन हो ध्यान करते रहे। भव्य था वातावरण। ऐसा दृश्य अन्यत्र दुर्लभ था।

बोधगया हमारी इस यात्रा का सब से महत्वपूर्ण पड़ाव था। भगवान बुद्ध के जीवनकाल में इस स्थान का नाम बोधगया नहीं था। इसे **उरुवेला** कहते थे। यह स्थान गया नगर से दक्षिण की ओर दस किलोमीटर की दूरी पर है। उन दिनों यहाँ की प्राकृतिक शोभा बहुत सुहावनी थी और ध्यान साधना के लिए बहुत उपयुक्त भी।

यहाँ चार दिनों का पड़ाव दिनांक २१, २२, २३ और २४ तक।

१- दिनांक २१ को सभी साधक-साधिकाओं ने बोधि वृक्ष तथा समीप के स्थानों के दर्शन किए।

२- दिनांक २२ को एक दिवसीय साधना शिविर, धम्मबोधि के पंडाल में, पूज्य गुरुजी एवं माता जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। सायं काल पूज्य गुरुजी द्वारा धर्म-प्रवचन – बोधगया के महत्व पर हुआ। समापन मैत्री-सत्र बोधि-वृक्ष के नीचे पूरा हुआ।

आज पूज्य गुरुजी एवं माता जी के सान्निध्य में सभी विपश्यना-यात्रियों ने बोधि-वृक्ष के नीचे रात्रि ९ से १० बजे तक सामूहिक साधना की। संसार के सभी विपश्यी साधक-साधिकाओं को भी ठीक इसी समय ध्यान करने को कहा गया था। **ध्यान के पुण्य का वितरण गुजरात के भूकंप-पीड़ितों को किया गया।** बोधि-वृक्ष के नीचे पूज्य गुरुजी एवं माता जी के सान्निध्य में यह सामूहिक साधना उच्चकोटि की थी। मन प्रीति-प्रमोद से पूरित हो उठा। फिर बोधि-वृक्ष के नीचे, धर्म की तरंगों का तो कहना ही क्या!!

दिनांक २३-२-२००१

आज संघदान था। स्थानीय भिक्षुओं को आमंत्रित किया गया था। पूज्य गुरुजी एवं माता जी सहित सभी धर्म यात्रियों ने भिक्षुओं को भोजन दान कर उन्हें चीवरादि (भिक्षुओं के उपयोग की चार वस्तुओं) का दान दिया। समारोह बड़ा ही भव्य था।

दोपहर बाद निरंजरा नदी को पार कर उसके पूर्वी तट पर सुजाता द्वारा बोधिसत्व को दी गयी खीर के स्थान तथा दुष्कर तपस्या में छः वर्ष व्यतीत किये गये पुरातन उरुबेला भू-खण्ड का दर्शन किया।

दिनांक २१, २२, २३, को प्रतिदिन रात्रि के समय पूज्य गुरुजी एवं माता जी के संग सभी धर्मयात्री बोधि वृक्ष के नीचे ध्यान किया करते थे। यह सत्र अत्यंत प्रभावशाली तथा धर्ममय तरंगों से परिप्लावित रहता था।

* * *

२९ वर्ष की अवस्था में राजकुमार सिद्धार्थ गौतम ने राजमहल का विपुल वैभव त्याग कर महाभिनिष्क्रमण किया था। गृह-त्याग किया था। कपिलवस्तु से चल कर रातों-रात **अनोमा-नदी** के तट पर पहुँचे थे जहाँ अपने सिर के बाल काटे और काषाय वस्त्र पहन कर श्रमण वेष धारण किया था। लगभग ४०० मील दूर मगध देश की राजधानी राजगृह पहुँचे थे। फिर पूछते हुए उरुबेला आये। ध्यान

कें द्रों में सातवाँ एवं आठवाँ ध्यान क्रमशः आलार कालाम तथा उद्दक रामपुत्त आचार्यों से सीखा। इन ध्यानों से चित्त में पर्याप्त मात्रा में निर्मलता तो आयी परंतु भव-संसरण से मुक्ति नहीं मिली।

आगे चलते हुए उरुबेला प्रदेश में आ पहुँचे। उन दिनों बहुप्रचलित श्रमण परंपरा के एक और मार्ग पर चले अर्थात् देह-दंडन आरंभ किया। यह मान्यता थी कि देह को भिन्न-भिन्न प्रकार के क्लेशों में से गुजारते हुए, नितांत निराहार रहते-रहते अंतर्मन के सारे क्लेश धुल जाते हैं, शरीर और चित्त के परे इंन्द्रियातीत अवस्था यानी परमसत्य का साक्षात्कार हो जाता है और भवचक्र से छुटकारा मिल जाता है। अतः राजकुमार इस दुष्कर तपश्चर्या में लग गये।

इन्हीं दिनों एक और घटना घटी। सिद्धार्थ के जन्म के समय आमंत्रित आठ में से सात ज्योतिषियों ने यह भविष्यवाणी की थी कि राजकुमार यदि गृहस्थ रहा तो चक्रवर्ती सम्राट बनेगा और यदि इसने गृह त्यागा तो परम ज्ञानी सम्यक संबुद्ध बनेगा। परंतु उन आठों में सबसे कम उम्र वाले कौंडन्य नामक ब्राह्मण ने यह भविष्यवाणी की कि यह व्यक्ति घर में रह कर चक्रवर्ती सम्राट नहीं, बल्कि गृहत्याग कर सम्यक संबुद्ध बनेगा। उनतीस वर्ष के बाद जब राजकुमार सिद्धार्थ ने घरबार छोड़ा तो ब्राह्मण कौंडन्य को यह दृढ़-विश्वास हुआ कि अब यह निश्चित रूप से सम्यक संबुद्ध बनने वाला है। अतः वह उसकी खोज करते-करते उससे उरुबेला में आ मिला। उसके साथ उसके चार अन्य ब्राह्मण मित्र भी थे। इन पाँचों ने तपस्वी राजकुमार के साथ तपस्या आरंभ कर दी।

घोर तपस्या का स्थान

अब हमलोग बोध गया के उस पार यानी नेरंजरा नदी के पूर्वी तट पर पहुँचते हैं जहाँ छोटी सी पहाड़ी पर एक गुफा है। वहीं पर राजकुमार ने **कठोर तपस्या** की और अन्य पाँचों ने भी समीप रह कर उसका साथ दिया। लगभग छः वर्षों तक कठोर तपस्या करते हुए जब तपस्वी राजकुमार का शरीर सूख कर काँटा हो गया तब उसकी समझ में आया कि देह-दंडन की साधना से अंतिम अवस्था प्राप्त नहीं होगी। इसलिए उसने आहार लेना आरंभ किया। इसे देख वे पाँचों साथी बड़े निराश हुए। उन्हें लगा कि यह तपभ्रष्ट हो गया है। सम्यक संबुद्ध नहीं बनेगा। अतः उसे छोड़ कर वे ऋषिपत्तन मृगदाव चले गये।

राजकुमार युक्ताहार-विहार का सेवन करता रहा। शरीर स्वस्थ एवं सबल हुआ। वैशाख पूर्णिमा की पिछली रात उसने **पाँच स्वप्न** देखे। सब का विश्लेषण किया। स्वप्न इस बात के द्योतक थे कि वह शीघ्र ही सम्यक संबोधि प्राप्त कर भवमुक्त होगा। यह भी स्पष्ट हुआ कि उसकी यह शिक्षा भारत की सीमा तक ही नहीं, बल्कि दूर-दूर विदेशों तक जाकर अनेक लोगों के कल्याण का कारण बनेगी। इन स्वप्नों को देखने के बाद वह उठा और उसी वटवृक्ष के नीचे आसन लगा कर प्रमुदित चित्त से ध्यानमग्न हो गया।

यहीं पर सुजाता ने उस बटवृक्ष के नीचे बैठे हुए सिद्धार्थ गौतम को खीर खिलायी थी।

सिद्धार्थ ने शाम को निरंजरा नदी पार की और उसके सुरम्य पश्चिमी तट पर एक पीपल के घने वृक्ष के नीचे एक सपाट चट्टान पर कुश बिछा कर ध्यान के लिए बैठ गये। आज जहाँ पावन बोधिवृक्ष और महाबोधि मंदिर है, इसी पेड़ के नीचे वज्रासन पर बैठे थे। मार को पराजित किया था। वैशाख की पूर्णिमा की रात को भवसंसरण से मुक्ति प्राप्त की। सम्यक-संबुद्ध हुए।

तब उनके मुख से यह उदान-वचन निःसृत हुआ – **"अनेक जातिसंसारं सन्धाविस्सं अनिविस्सं** ....." जिसमें भव-चक्र के बनने तथा नाश होने का कारण बताया गया है। तृष्णा के कारण ही हम बार-बार भव-चक्र में पड़ते हैं और दुःख भोगते हैं तथा तृष्णातीत होकर ही हम दुःखातीत हो सकते हैं। इस प्रकार भगवान ने इस उदान में अपनी उस मुक्तावस्था की प्राप्ति का वर्णन किया जहाँ तृष्णा संपूर्ण रूप से नाश हो गई थी।

सात सप्ताह

सम्यक संबुद्ध होने पर भगवान ने सात सप्ताह ध्यान-सुख में व्यतीत किया। वे सात स्थान इस प्रकार हैं: – १- बज्रासन; २- अनिमेष चैत्य। ३- रत्नचंक्रमण। ४- रत्नघर (अभिधम्म)। ५- अजपाल न्यग्रोध। ६- मुचलिन्द। ७- राजायतन वृक्ष।

जब बुद्ध राजायतन वृक्ष के नीचे ध्यान सुख में बैठे थे तभी **बर्मा के दो व्यापारी तपस्सु और भल्लिक** ने उनका दर्शन किया। चावल और मधु के बने लड्डू तथा मट्ठे का उन्हें भोजन प्रदान किया। सुजाता की खीर खाने के सात सप्ताह बाद भगवान बुद्ध का यह पहला आहार था।

बोधि मंदिर

वर्तमान बोधि मंदिर सम्राट अशोक द्वारा निर्मित मंदिर की नींव पर बना है। आज इस १७० फुट ऊंचे दुमंजिले मंदिर की पहली मंजिल के गर्भगृह में भूमि-स्पर्श मुद्रा में भगवान बुद्ध की एक अत्यंत भव्य और विशाल मूर्ति स्थापित है। ऊपरी मंजिल में किसी बोधिसत्व की खड़ी मूर्ति स्थापित है।

दिनांक २४ फरवरी २००१. शनिवार

राजगृह और नालंदा

सभी धर्म-यात्रियों ने धम्मबोधि से राजगृह की ओर १६ बसों में सवार हो प्रातः ७:०० बजे प्रस्थान किया। पूज्य गुरुजी एवं माता जी भी हमारे साथ ही साथ रहे।

१- 'राजगह=राजगृह' बुद्ध के समय मगध की राजधानी थी। पुरातन समय में इसे 'गिरिवज्र' भी कहते थे। यह पाँच पर्वतों से घिरा है यथा –१- इसिगिल, २- वेपुल्ल, ३- वैभार, ४- पाण्डव, ५- गिज्झकूट।

राजगृह वही स्थान है जहाँ राजा बिंबिसार युवा परिव्राजक सिद्धार्थ गौतम से पहली बार मिला था। सुकुमार राजकुमार को राज्य वैभव देकर रोकना चाहा, परंतु संकल्प से अडिग राजकुमार को लुब्ध नहीं कर पाये। फिर उनसे वचन लिया कि बोधि प्राप्त करने के पश्चात वे उनको अपने मुक्ति-सुख से लाभान्वित करने के लिए उनके राज्य में आयेंगे। बोधि प्राप्ति के पश्चात भगवान अपने पाँच साथियों को धर्म सिखाने सारनाथ चले गये थे। संघ की स्थापना के साथ वहाँ प्रथम वर्षावास पूरा किया। तत्पश्चात उन्होंने ६० अरहंतों को धर्म चारिका के लिए विभिन्न दिशाओं में भेजा और स्वयं राजा बिंबिसार को दिया वचन पूरा करने के लिए राजगृह की ओर प्रस्थान किये।

२- राजगृह आते हुए रास्ते में पहले उरुवेल का जंगल पार करना था। यहीं पर अग्निहोत्री ब्राह्मण परिव्राजक उरुवेल-काश्यप अपने ५०० अनुयायियों के साथ भगवान का शिष्यत्व ग्रहण कर मुक्तिलाभी हुआ। गया-काश्यप और नदी-काश्यप भी अपने क्रमशः ३०० तथा २०० अनुयायियों सहित शिष्यत्व ग्रहण कर जीवन-मुक्त हुए। जब एक हजार अरहंत शिष्यों के साथ तथागत

मगध के राज्य राजगृह के निकट वेणुवन में ठहरे तो राजा बिंबिसार ने भगवान सहित भिक्षु संघ का भव्य स्वागत किया। स्वयं अपनी परिषद सहित उनका धर्मोपदेश सुन कर शरणागत हुए। उपासक शिष्य बने। एक हजार प्रतिष्ठित अग्निहोत्री जटिल ब्राह्मणों द्वारा भगवान का शिष्यत्व ग्रहण किया जाना मगध की जनता के लिए एक आश्चर्यजनक घटना थी।

३- यहीं पर संजय नामक आचार्य के शिष्य आयुष्मान सारिपुत्र और मोग्गल्लान (उपतिस्स तथा कोलित) सहित २५० परिव्राजक भगवान से प्रव्रजित हो, मुक्त हुए, अरहंत हुए। सारिपुत्र तथा मोग्गल्लान भगवान के धर्मसेनापति हुए। दोनों दाहिना और बाँया हाथ हुए। कोलित तथा उपतिष्य-ग्राम भी राजगृह के समीप ही स्थित थे। भगवान के संबंध में लोग कहने लगे थे कि यह तो सब को भिक्षु बना देगा। गृहस्थों का घर उजाड़ देगा। परंतु यह लांछन बहुत दिनों तक नहीं टिक सका। स्वयं राजा बिंबिसार अपनी राजपरिषद के साथ गृहस्थ उपासक ही तो थे। राजगृह में भगवान के अनुयायियों की दो तिहाई संख्या गृहस्थ उपासक उपासिकाओं की थी। विपश्यना विद्या प्रव्रजित तथा गृहस्थ दोनों के लिए समान रूप से कल्याणकारिणी थी। यह सब के लिए स्पष्ट हो गया।

४- श्रावस्ती का श्रेष्ठी सुदत्त 'अनाथपिण्डिक' राजगृह में अपने बहनोई से मिलने आया था। बहनोई से जब यह जाना कि लोक में बुद्ध उत्पन्न हुए हैं तब बहुत भावविभोर हुआ। वह भगवान से यहीं पर शीतवन में मिला। धर्मोपदेश सुन कर उसे मुक्ति का साक्षात्कार हुआ। भगवान से श्रावस्ती आने के लिए निवेदन किया। भगवान ने उसका आमंत्रण स्वीकार किया।

५- महाराज बिंबिसार ने भगवान को सर्वप्रथम यहीं पर **वेळुवन विहार** दान में दिया। भगवान ने संघ को 'विहार' ग्रहण करने की अनुमति दी।

६- सिद्धार्थ गौतम का चचेरा भाई देवदत्त भिक्षुसंघ में सम्मिलित हुआ तो यह आश लगाये बैठा था कि भगवान उसे धर्मसेनापति बनायेंगे। लेकिन जब भगवान ने योग्य पात्र सारिपुत्र को अपना धर्मसेना पति घोषित किया तो उसका वैर पराकाष्ठा पर पहुँच गया। उसने चमत्कार दिखा कर राजा बिंबिसार के पुत्र युवराज अजातशत्रु को प्रभावित किया तथा अपना शिष्य बना लिया। उससे मिल कर षड़यंत्र किया। अजातशत्रु से जघन्य अपराध करवाया। अजातशत्रु ने अपने पिता राजा बिंबिसार को वंदीगृह में डाला। वंदीगृह में मरने पर विवश कर दिया। देवदत्त ने भिक्षु संघ में फूट डाली। यहीं गिज्झकूट (गृध्रकूट) पर्वत से उसने भगवान पर पाषाण-खंड लुढ़काया। भगवान के पैर के अंगूठे में चोट लगी थी। भगवान को कुचल कर मारने के लिए प्रमत्त नालागिरि हाथी को छुड़वाया। भगवान का वध करने के लिए वधिकों को भी भेजा। परंतु सफल नहीं हो सका।

७- कालुदायी भगवान के पिता सुद्धोदन का संदेश यहीं लाया था। (भगवान कपिलवस्तु गये। सारिपुत्र के आग्रह पर महाबुद्धवंस की देशना की। महाप्रजापती गौतमी राहुल तथा यशोधरा ने भगवान के दर्शन किये। सारे राजपरिवार ने भगवान का धर्मोपदेश सुना। इसी समय राहुल, नन्द प्रव्रजित हुए। यहीं पर नियम बना कि माता-पिता की अनुमति के बिना किसी अल्पवयस्क को प्रव्रजित न किया जाय।)

८- भगवान ने यहीं पर -दूसरा, तीसरा, चौथा, सत्रहवाँ तथा बीसवाँ कुल पांच वर्षावास किया था।

९- भगवान के महापरिनिर्वाण के चार माह बाद प्रथम धर्म संगायन (प्रथम संगीति ई.पू. ४८३) महाकाश्यप की अध्यक्षता में यहीं दक्षिणागिरि की सप्तपर्णी गुहा में हुई। आज भी वह उपेक्षित खण्डहर अपनी धर्म तरंगों से आप्लावित है।

१०- राजगृह के आसपास बहुत महत्वपूर्ण स्थान थे यथा; कलन्दक निवाप, शीतवन, जीवक का अम्बवन, इन्द्रशालगुहा, सप्तपर्णीगुहा आदि। भगवान ने अनेक सुत्तों की देशना यहीं की थी।

राजगृह उस समय भारत के छः बड़े नगरों में से एक था। पूज्य गुरुजी ने इसके महत्त्व को हम सभी विपश्यना-यात्रियों को धम्मबोधि के एक दिवसीय शिविर के समापन प्रवचन में समझा दिया था। सभी धर्मयात्रियों ने अपने शास्ता के सान्निध्य में यहाँ के धर्ममय वातावरण का प्रभूत लाभ उठाया।

राजगृह में भोजन करने के पश्चात धर्म यात्री बस पर सवार हो **नालंदा** की ओर चले। नालंदा का खण्डहर देखा। उसकी विशालता को देख कर मन चमत्कृत हो उठा। सम्राट अशोक के बहुत बाद नालंदा विश्वविद्यालय का निर्माण हुआ। पाँचवीं शताब्दी में यह अस्तित्व में आया था।

एक बार भगवान नालन्दा में **प्रावारिक आम्रवन** में ठहरे थे। राजगृह-नालंदा के मध्य अंबलट्ठिका था। यहाँ भगवान ने कई उपदेश दिये थे।

सामने जो गाँव बसा हुआ है उसके नीचे इसका विस्तृत खण्डहर दबा हुआ है। कालांतर में नासमझों ने इसे जला दिया। कहते हैं इस पुस्तकालय में रखी अनेक पुस्तकें ताड़पत्रों पर लिखी थी, छः मास तक जलती रहीं।

यात्री देर रात पुनः धम्मबोधि लौट आये। भोजनोपरांत विश्राम।

मंगल मृत्यु

एक यात्रा का अंत

नागपुर निवासी श्री विसनजी भाई शाह ने वैशाखी पूर्णिमा के दिन ७६ वर्ष की पकी आयु में अपनी जीवन-यात्रा अत्यंत शांति एवं सजगतापूर्वक समाप्त की। बाल्यकाल से ही धार्मिक वातावरण में पले, मुक्तिसंग्राम में भाग लिया। व्यापारिक क्षेत्र में पूर्ण शुद्धता स्थापित करते हुए ज्वलंत सफलता प्राप्त की।

सन १९७३ में विपश्यना के बारे में सुना तो भद्रेस्सर-कच्छ में शिविर लेने चले गए। फिर तो परिवार के सभी सदस्यों को भेजा और नागपुर में शिविर लगवाने तथा हृदयरोग से पीड़ित होने पर भी अदम्य उत्साह एवं अथक परिश्रम करके वहां के केंद्र स्थापन में प्रमुख भूमिका निभाई।

उनकी प्रेरणा से नागपुर तथा अन्य स्थानों के अनेक लोगों ने धर्मलाभ प्राप्त किया।

• ऐसी ही धर्मलाभी नागपुर की ६८ वर्षीया सौम्यता व सालीनता की प्रतिमूर्ति समाजसेविका, अच्छी धर्मसेविका श्रीमती सरस्वतीबाई सोमकुंवर ने भी अत्यंत शांतिपूर्वक बैठी हुई साधनारत रहते ही अपना अंतिम सांस छोड़ा।

• ऐसी ही नागपुर की एक अन्य साधिका सौ. मालतीबाई दिवाकर बोरकर भी श्री वसनजी से प्रेरणा पाकर साधनारत हुई और निरंतर साधना करती हुई हृदयाघात से मृत्यु होने पर भी चेहरे की शांति और चमक दर्शनीय थी।

• इसी प्रकार भिलाई दुर्ग के विपश्यना केंद्र के ट्रस्टी श्री बालकिसन सारडा और सौंसर (म.प्र.) के श्री पुंडलिक रावबागड़े भी धर्मलाभ से प्रभावित हुए और मनुष्य जीवन को सार्थक बना लिया। मृत्युपश्चात इनके चेहरों से आभा फूट रही थी।

नए उत्तरदायित्व :

आचार्य

१-२. डॉ. रूप एवं श्रीमती वीणा ज्योति,
पूरे नेपाल क्षेत्र के आचार्य की सेवा
३. अनागारिका रत्नमंजरी, धर्मप्रसारण की सेवा
४-५. श्री वेदनाथ एवं श्रीमती मनोहारी आचार्य,
'धम्मचितवन', 'धम्मतराई' एवं
'धम्मविराट' की सेवा
६. श्री बोधिबज्र बज्राचार्य, नेपाल के अकेंद्रीय
एवं जेल-शिविरों की सेवा
७-८. श्री उत्तमरत्न एवं श्रीमती ज्ञानी धाख्वा, नेपाल
के स.आ. कार्यक्रम एवं स.आ. प्रशिक्षण की सेवा
९. सुश्री नानीमैया मानंधर, पालि प्रशिक्षण
एवं नेपाल में प्रकाशन-कार्य की सेवा
१०. श्री भक्तिदास श्रेष्ठ, धर्मप्रसारण की सेवा
११. श्री आनंदराज एवं श्रीमती नानी मैजू शाक्य,
'धर्मशृंग' एवं 'धम्मजननी' की सेवा
१२. श्री यदुकुमार सिद्धि, धर्मप्रसारण की सेवा
१३. श्री मदन तुलाधर, धर्मसेवक प्रशिक्षण
एवं धर्मसेवक संयोजक की सेवा
14. Mr Geevaka de Soyza, *Sri Lanka*
Spread of Dhamma

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. Ven. Sister Vajira, *Sri Lanka*
2. Ms Komodhi Mendis, *Sri Lanka*

नवनियुक्तियां : सहायक आचार्य

१-२. श्री विष्णुकुमार एवं श्रीमती सुमन गोयन्का,
मुजफ्फरपुर (बिहार)
३. श्रीमती स्नेहलता जैन, यू.के.
4. Mr Paul Topham, *U.K.*
5. Ms Angela Davis, *U.K.*
6. Mr Paul Blamey, *U.K.*
7. Mr Sergio Borsa, *Italy*
8-9. Mr Arthur Rosenfield, *USA*
& Mrs. Anna Teixido, *Spain*
10. Mr R. P. C. Rajapakse, *Sri Lanka*
11. Mr D. H. Anura Piyatissa, *Sri Lanka*
12. Ms Dido Prabha Ranasooriya, *Sri Lanka*

बालशिविर शिक्षक

1-2. Mr L. H. Chandrasena, *Sri Lanka*
3. Ms Ranjini Jayaratne, *Sri Lanka*
4. Mr D. P. Henry, *Sri Lanka*
5. Mr Andrea Mazza, *Italy*

दोहे धर्म के

इस धरती का वृक्ष का, ऐसा तेज प्रताप।
सबकी मंशा पूर्ण हो, दूर होंय दुख ताप॥

बोधिवृक्ष की छांह में, जगा बोधि का ज्ञान।
बोधिसत्व गौतम यहीं, बने बुद्ध भगवान॥

बोधिमंड के देवगण, होवें पुलकित प्राण।
आओ! फिर सुमरण करें, शुद्ध बोधि का ज्ञान॥

धन धन धरती धरम की, धन्य धन्य तरुराज।
तेरी छाया जो तपे, सिद्ध होय सब काज॥

धन्य! ध्यान की गिरि गुहा, धन्य! ध्यान का स्तूप।
यहां शांति सबको मिले, भिक्खू हो या भूप॥

साधक शांत कुटीर में, धर्म विपश्यी होय।
जागे प्रीति प्रमोद सुख, अमृत-दर्शी होय॥

मेसर्स मोतीलाल बनारसीदास
• महालक्ष्मी मंदिर लेन, ८ महालक्ष्मी चैंबर्स, २२ वार्डन रोड, मुंबई-४०००२६.
- ४९२३५२६, • सनस प्लाजा, शॉप ११-१३, १३०२, सुभाष नगर, पुणे-४११००२.
-४८६१९०, • दिल्ली- २९११९८५,• पटना- ६७१४४२, • वाराणसी- ३५२३३१,
• बैंगलोर- २२१५३८९,• चेन्नई- ४९८२३१५, • कलकत्ता२४३४८७४
की मंगल कामनाओंसहित

दूहा धरम रा

सद्धा जागी बुद्ध पर, कर्यो धरम अभ्यास।
जनम जनम की बुझ गयी, अन्तरतम की प्यास॥

सद्धा उमड़ी बलवती, सद्धा भाजन बुद्ध।
बिमल धरम रो पथ मिल्यो, कीन्यो चित्त बिसुद्ध॥

उलझन ही उलझन बढ़ी, मिल्यो न दुख रो अन्त।
मुक्ति मोच्छ निरबाण रो, पंथ दियो भगवन्त॥

बढतो जातो भटकतां, भवभय दुक्ख अनन्त।
जै बुधजी ना ढूंढता, सांच धरम रो पन्थ॥

जै बुधजी ना ढूंढता, सम्यक् दरसन ग्यान।
तो भवभय ही भटकता, बंधन बँध्या अजान॥

चालत चालत धरम पथ, चित्त बिमल जदि होय।
तो सम्यक् सम्बुद्ध की, सही बन्दना होय॥

मेसर्स गो गो गारमेंट्स
३१ -४२, भांगवाड़ी शॉपिंग आर्केड,
१ला माला, कालबादेवी रोड, मुंबई - ४००००२.
०२२- २०५०४१४
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) ८४०८६, ८४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५४५, आषाढ़ पूर्णिमा, ५ जुलाई, २००१**

वार्षिक शुल्क रु. २०/-, विदेश में US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. २५०/-, " US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६**/७१. Regn. No. AR/NSK-46/2001,

Licenced to post **without Prepayment of postage** -- Licence number-- **AR/NSK-WP/3**
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
दूरभाष : (०२५५३) ८४०७६
फैक्स : (०२५५३) ८४१७६
Website: www.vri.dhamma.org
e-mail: <dhamma@vsnl.com>